महात्मा गान्धी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

संस्कृत विभाग

डिप्लोमा इन् वास्तुशास्त्र

Programme obejactive

1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वास्तुशास्त्र से परिचित कराना है।
2. इस पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात् छात्र वास्तुशास्त्र का अधिकृत विशेषज्ञ हो सकेगा।
3. इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् छात्र आवास, व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि में वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्माण आदि का ज्ञान आर्जित कर लेगा।

Programme Outcomes

1. सामाजिक तथा वैयक्तिक उन्नति के लिए वास्तुशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्तों का ज्ञान।
2. सभी प्रकार के कष्टो के निवारण वास्तुशास्त्र के नियमों से करने में निपुणता।
3. व्यक्ति के आवास व कार्यस्थल को वास्तु के अनुसार व्यवस्थित कर उसके जीवन को आनन्दपूर्ण बनाने के सिद्धान्तो का ज्ञान।

महात्मा गान्धी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट

संस्कृत विभाग

डिप्लोमा इन् वास्तुशास्त्र

प्रथम प्रश्न पत्र- वास्तुभूमि चयन

Course obejactive

1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वास्तुशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।
2. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों वास्तुशास्त्र, वास्तुभेद प्रयोजन के विषयों से परिचित कराना है।

Course outcomes

1. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी वास्तुशास्त्र मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
2. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी वास्तुशास्त्र, वास्तुभेद प्रयोजन विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

द्वितीय प्रश्न पत्र- भवनस्वरूपविचार

Course obejactive

1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहपिण्ड तथा ग्रहगर्भ के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।
2. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रामवास का शुभाशुतत्व के विषयों से परिचित कराना है।

Course outcomes

1. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ग्रहपिण्ड तथा ग्रहगर्भ के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
2. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ग्रामवास का शुभाशुतत्व के विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

तृतीय प्रश्न पत्र- द्वार- गवाक्षादि विचार एवं मुहूर्तविचार

Course obejactive

1. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहरम्भ मुहूर्त तथा ग्रहरम्भ विधि के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।
2. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहरम्भ का मुहूर्त चक्र शुद्धि, मास तथा विचार– इन विषयों से परिचित कराना है।

Course outcomes

1. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ग्रहरम्भ मुहूर्त तथा ग्रहरम्भ विधि सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
2. इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को ग्रहरम्भ का मुहूर्त चक्र शुद्धि, मास तथा विचार – इन विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

[illegible]	[illegible] एवं वास्तुशास्त्र	[illegible]	[illegible]
पाठ्यक्रम-[illegible]	वास्तुभूमि चयन	[illegible]	[illegible]
विषय कोड	[illegible] (DIV)	पेपर कोड	[illegible]
यूनिट	[illegible]	क्रेडिट	[illegible]

यूनिट-1	गुणा:	घण्टा	क्रेडिट
वास्तुशास्त्र का परिचय एवं कुण्डलीनिर्माणविधि	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1. ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुशास्त्र का संक्षिप्त परिचय
2. ज्योतिषशास्त्र एवं वास्तुशास्त्र में सम्बन्ध
3. वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य
4. वास्तुशास्त्र के मुख्यग्रन्थों का परिचय
5. पञ्चाङ्गविचार
6. राशिपरिचय
7. ग्रहविचार (नाम, उच्च-नीचादि स्थान, ग्रहमैत्री एवं दृष्टिविचार)
8. इष्टकाल साधन
9. भयातभभोग साधन
10. ग्रहस्पष्टीकरण
11. लग्न साधन
12. भावविचार
13. षड्वर्गविचार
14. विंशोत्तरीदशा विचार

यूनिट-2	गुणा:	घण्टा	क्रेडिट
ग्राम में वास्तुचयन विचार	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1. वास्तुशास्त्र का प्रयोजन
2. वास्तुशास्त्र एवं पञ्चमहाभूत
3. गृहनिर्माण का हेतु
4. परगृह में वासफल
5. जीर्णगृहोद्धार का फल
6. ग्रामवास में नराकृतिचक्र विचार
7. ग्रामवास में शुभाशुभज्ञान हेतु शिवावलि विचार
8. वर्ग एवं काकिणी विचार
9. राशिवश निषिद्धस्थान
10. नामराशि अनुसार ग्रामवास विचार
11. दिग्दशाज्ञान एवं फलविचार

यूनिट-3	गुणा:	घण्टा	क्रेडिट
भू-परीक्षण	[illegible]	[illegible]	[illegible]

1. वर्ण, गन्ध, रस के अनुसार भूमिलक्षण एवं फलज्ञान
2. भू-[illegible] फलविचार
3. गृह के चारों ओर वृक्षों का [illegible]

4. मधुरादि भूमि परीक्षण का विचार
5. गन्ध, वर्णादि, द्रुम, लतादि द्वारा भूमि का परीक्षण
6. कुटिलादि भूमि का फलविचार
7. गजपृष्ठ कूर्मपृष्ठ दैत्यपृष्ठ नागपृष्ठ भूमि के लक्षण एवं फलविचार
8. आयत चतुरस्रादि आकृतिवश भूमिलक्षण
9. प्लवस्तोम से भूमि का शुभाशुभत्व
10. जाङ्गलादि भूमि के लक्षण एवं फलविचार
11. कीलितादि भूमि के लक्षण एवं उनके फलविचार
12. पवन द्वारा कीलितादि भूमि का ज्ञान
13. दूर्वा एवं धान्यों से भूमि का परीक्षण
14. खातविधि द्वारा भूमिपरीक्षण
15. खातमुहूर्त में राहु का ज्ञान
16. भूमिसंशोधन में सूत्रनिर्णय
17. शल्योद्धार के लिए भूमिसंशोधन

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. बृहद्वास्तुमाला - श्री रामनिहोरद्विवेदी
2. वास्तुप्रदीपकम् - श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदी
3. वास्तुरत्नावली
4. मुहूर्तचिन्तामणि - श्री रामदैवज्ञ

DEAN
FACULTY OF ARTS

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
प्रश्नपत्र-२	भवन स्वरूप विचार	अंक	५०
विषय कोड	६५ (DIV)	पेपर कोड	[illegible]
यूनिट	०२	क्रेडिट	०२

यूनिट-१			
वास्तु एवं उसके भेद	[illegible]	[illegible]	१

1. वास्तुपुरुष का स्वरूप
2. वास्तु के सन्निकट वातावरण का महत्त्व
3. भूखण्ड की आकृति विषयक ज्ञान (आयतभूमि, वर्गाकारभूमि, विषमचतुर्भुजभूमि, भद्रासनभूमि, वृत्ताकारभूमि, चक्रभूमि एवं त्रिकोणाकारभूमि)
4. तृण, काष्ठ, मृत्तिका, इष्टिका एवं प्रस्तर गृह का फल
5. व्यावसायिकवास्तु विचार
   - विपणिगृह (दुकान, शोरूम, कार्यालय)
   - भोजनशाला
   - चिकित्सालय
   - कुटीरोद्योगगृह, लघुद्योगगृह
   - शिल्पगृह (मिल, कारखाना)
6. धार्मिकवास्तु विचार
   - मंदिर
   - गुरुद्वारा
   - आश्रम (मठ, विश्रामशाला)
   - धर्मशाला
   - कूप, वापी एवं तड़ाग

यूनिट-२	घण्टा	घण्टा	क्रेडिट
भित्ति-स्तम्भादि विचार	[illegible]	[illegible]	१

1. गृहारम्भ से पूर्व भूमिपूजन का महत्त्व
2. शिलान्यास में दिशानिर्णय
3. पिण्ड से बाहर एवं अंदर भित्ति का ज्ञान
4. गृहनिर्माण के लिए इष्टिकाओं के नाम
5. इष्टिकाचक्रविचार
6. इष्टिका के ऊपर वर्जितदीपकचक्रविचार
7. स्तम्भस्थापन विचार
8. स्तम्भादिकाष्ठविधि
9. गृहनिर्माण में ग्राह्य एवं अग्राह्य काष्ठ
10. गृहकार्य हेतु द्रुमच्छेदन का मुहूर्त
11. [illegible]
12. [illegible]

FACULTY OF ARTS [illegible]

13 वास्तुपुरुष
14. अक्षांशवश से [illegible] के ज्ञान
15 गृह से ऊँचाई का ज्ञान
16 [illegible]ज्ञान
17 पूर्वादि दिशाओं में गृह के उच्च, नीच का फल
18 अन्तर्गत वास्तुभूमि की दिशा के आधार से कक्षनिर्माणव्यवस्था

यूनिट-३	गुणा:	घण्टा	क्रेडिट
दिक्साधन एवं पिण्ड-आयादि विचार	२५	३३	२
1. दिक्साधनविधि 2. पिण्डसाधन 3. आयविचार 4. गृह आयु विचार 5. गृहविनाश हेतु विचार 6. आय, व्ययज्ञान से गृह का शुभाशुभत्व ज्ञान 7. ध्रुवादिकविचार			

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. बृहद्वास्तुमाला - श्री रामनिहोरद्विवेदी
2. वास्तुरत्नावली
3. भारतीयवास्तुशास्त्र - राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थान
4. मुहूर्तचिन्तामणि - श्री रामाचार्य

DEAN
FACULTY OF ARTS
M.G.C.G.V. Chitrakoot
Distt. Satna (M.P.)

वर्ग	[illegible]	समयावधिः	३ घण्टे
प्रश्नपत्रम्-२	द्वार-शालादि विचार एवं मुहूर्तविचार	पूर्णांकः	७०
विषय कोड	९२ (DIV)	पेपर कोड	६१३
यूनिट	०२	क्रेडिट	०२

यूनिट-१	पूर्णांक	घण्टा	क्रेडिट
गृहारम्भ मुहूर्त एवं द्वारादि विचार	३५	१५	१

1. गृहारम्भ में कालशुद्धि
2. गृहारम्भ में शुभ मास, तिथ्यादि विचार
3. राहुमुखविचार
4. गृहारम्भ में पञ्चाङ्गशुद्धि
5. गृहारम्भ में सप्तस्कारयोग
6. भूमिशयन के नक्षत्र एवं उपयोगिता
7. सूतिकागृहनिर्माण में कालविचार
8. गृहारम्भ में वृषवास्तुचक्र
9. अजीर्ण एवं जीर्ण गृहविचार
10. द्वारविचार
11. द्वारवेधविचार
12. सूर्यनक्षत्र से द्वारचक्रविचार
13. गृहशोभा की दृष्टि से निषिद्ध पशु, पक्षियों का विचार
14. गृह के समीप शुभाशुभ वृक्षविचार
15. दिशाओं के अनुसार वृक्षरोपणविचार
16. वृक्षारोपणमुहूर्त

यूनिट-२	पूर्णांक	घण्टा	क्रेडिट
गृहसम्बन्धित शुभाशुभयोग एवं गृहप्रवेशमुहूर्त	[illegible]	१५	१

1. गृहकालिक कुण्डली द्वारा गृहायुर्दायज्ञान, लग्नसंयुक्तगृहयोग, गृह का परहस्तगमनयोग एवं अन्य शुभाशुभ योगविचार
2. कपाट से रहित गृह में प्रवेशनिषेधविचार
3. गृहप्रवेश में समयनिर्देश
4. गृहप्रवेश में मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्रादि विचार
5. गृहप्रवेश में लग्नशुद्धि
6. गृहप्रवेश में वामरविविचार
7. गृहप्रवेश में कलशचक्रविचार
8. गृहप्रवेश में गृहपति का कर्तव्य
9. [illegible]मुहूर्तविचार
10. [illegible]
11. [illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1. गृह के [illegible] से सम्बन्धित			
2. [illegible]			
3. [illegible]			
4. एकाशीति वास्तुचक्र			
5. चतुःषष्टिपद वास्तुचक्र			
6. शिलान्यास विधान			
7. वास्तुशान्ति विधान			
8. गृहप्रवेश विधान			

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. बृहद्वास्तुमाला - श्री रामनिहोरद्विवेदी
2. वास्तुरत्नावली
3. भारतीयवास्तुशास्त्र - राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थान
4. मुहूर्तचिन्तामणि - श्री रामाचार्य